8

प्राथमिक शिक्षा व शिक्षकों से जुड़ी विपरीत परिस्थितियाँ एवं उनका सामना

अलका त्रिपाठी *
अंजली बाजपेयी**

एक बच्चे के जीवन मे उसकी प्रारंभिक शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है। एक बच्चा कैसा बनेगा ये उसकी शुरुआती शिक्षा अर्थात् प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर उनकी शिक्षा अच्छी हुई है तो उसके सही मानसिक विकास की संभावना बढ़ जाती है नहीं तो विपरीत भी सत्य है। जब हम प्राथमिक शिक्षा अच्छी होने की बात करते हैं, तो उसमें एक बहुत महत्वपूर्ण बात छिपी हुई है और वह यह है कि प्राथमिक विद्यालय में एक शिक्षक ही विद्यार्थियों को बनाने व बिगाड़ने में उसकी मदद करता है। हम सभी जानते हैं कि देश में प्राथमिक विद्यालयों की क्या स्थिति है देश में, किस तरह की सुविधाएँ है प्राथमिक विद्यालयों में ऐसी स्थिति एक शिक्षक के सामने एक कठिन समस्या पैदा करती है। शिक्षक का दायित्व है कि वे एक बच्चे के विकास में अपना योगदान दें।

लेख में हम प्राथमिक विद्यालयों ये संबंधित कठिनाइयों की चर्चा करेंगे कि कैसे यह कठिनाइयाँ शिक्षकों के लिए विपरीत परिस्थितियाँ पैदा करती हैं और शिक्षक उन परिस्थितियों को कैसे दूर करके अध्ययन-अध्यापन कार्य को सुचारू रूप से चलाते हैं।

शिक्षा का प्रथम स्तर प्राथमिक शिक्षा ही है। अतः इस नींव को सुदृढ़ करना, इसके उद्देश्य तथा भागीदारी को समझना शिक्षा से जुड़े हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। प्राथमिक शिक्षा से अभिप्राय शिक्षा काल के शुरुआती 5 से 7 वर्षों से है।

गांधी जी ने प्राथमिक शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार से व्यक्त की है — 'इसे बेसिक शिक्षा भी कहा जा सकता है। यह 7 से 14 वर्ष तक के बालकों के लिए अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा है तथा हस्तकला से संबंधित है। इससे छात्र आत्मनिर्भर बनता है तथा भावी भविष्य के व्यावहारिक हस्तकौशल को ग्रहण करता है।'

प्राथमिक शिक्षा का किसी बच्चे के प्रारंभिक जीवन स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा शिक्षा का प्रारंभिक स्तर होता है, जहाँ बच्चों के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व गत्यात्मक विकास की संतुलित रूप से शुरुआत होती है। प्राथमिक शिक्षा, बच्चों के लिखने और पढ़ने की

* *शोध छात्रा*, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
** *प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी

क्षमता के विकास से जुड़ी है व साथ ही साथ यह उनकी मातृभाषा का विकास करने मे भी सहायक होती है। मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आगे के जीवन के लिए तैयार करने में पहली सीढ़ी का काम करती है। इस स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास की ज़िम्मेदारी जितनी उनके माता-पिता की होती है उतनी ही उनके शिक्षकों की भी होती है।

जैसा कि हम जानते है कि किसी भी विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनकी प्राथमिक शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है। हम इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि किसी भी विद्यार्थी के लिए उसकी प्राथमिक शिक्षा उनके लिए नींव की ईंट का काम करती है। अर्थात् नींव जितनी मज़बूत होगी दीवार उतनी ही मज़बूत होती है और इस दीवार को मज़बूत करने का कार्य करते हैं उसके मज़दूर अर्थात् प्राथमिक शिक्षक। अतः जैसे ही हम नींव की ईंट को मज़बूत करने की बात करते हैं वहाँ प्राथमिक शिक्षकों की महत्ता अपने आप दिखने लगती है।

वर्तमान परिदृश्य में अगर देखें तो हम कह सकते हैं कि आजकल अच्छे प्राथमिक शिक्षकों की कमी है कुछ तो अपने मन से इस क्षेत्र में कदम नहीं रखना चाहते तो कुछ यहाँ पर उभरने वाले विपरीत परिस्थितियों से घबराकर इस क्षेत्र को छोड़ देते हैं।

अतः हमें सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी विपरीत परिस्थितियाँ कौन-कौन सी हैं, जिसका एक शिक्षक को सामना करना पड़ता है—

- प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन कम होना — हम अकसर देखते हैं कि प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन आवश्यकता से कम होता है। ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति जागरुकता की कमी होती है वे शिक्षा को एक बोझ की तरह लेते हैं। अतः विद्यालय में बच्चों को नहीं भेजना चाहते है।
- विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति का कम होना— हम जैसे ही अपने गाँव या कस्बे के प्राथमिक विद्यालयों में नजर दौड़ाते हैं हमें यह बात देखने को मिल जाती है कि कक्षा के दौरान विद्यार्थियों की उपस्थिति नाममात्र होती है व जैसे ही मध्याह्न भोजन का कार्यक्रम शुरू होता है उनकी उपस्थिति कई गुना बढ़ जाती है। अतः यह भी शिक्षकों के लिए एक विपरीत परिस्थिति है।
- विद्यालयों के उचित भवनों का अभाव—प्राथमिक शिक्षकों के लिए विद्यालयों में सही भवनों का न हो भी एक विपरीत परिस्थिति पैदा करती है, जिसके कारण उन्हें कभी मैदानों में तो कभी पेड़ों के नीचे शिक्षण कार्य को पूर्ण करना पड़ता है। जिसके कारण विषम दिन में कक्षाएँ नहीं चल पाती है।
- विद्यालयों में शौचालयों का अभाव—प्राथमिक विद्यालयों में शौचालयों की बहुत कमी है। अधिकांश विद्यालयों में शौचालय हैं ही नहीं, जिसके कारण शिक्षक व विद्यार्थियों को बाहर खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। अगर विद्यालय में शौचालय हैं भी तो बालक व बालिकाओं के लिए अलग-अलग नहीं हैं। जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से सही नहीं है।
- अभिभावकों में बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरुकता की कमी—शिक्षकों को जो सबसे बड़ी विपरीत परिस्थिति का सामना करना पड़ता है वह यह है कि अभिभावकों में उनके बच्चों के प्रति

शिक्षा के लिए जागरुकता की कमी का होना। वह यह समझते हैं कि बच्चे खासकर लड़कियाँ पढ़कर क्या करेंगी? अगर घर पर रहे तो घर के कामों में हाथ बटाएँगी और घर के लिए कुछ पैसे कमायेगी।

विपरीत परिस्थिति का सामना करने के उपाय

प्राथमिक विद्यालयों से संबंधित उपरोक्त विपरीत परिस्थितियों पर नज़र दौड़ाएँ तो ये छोटी-मोटी समस्या नहीं लगेंगी। ये ऐसी समस्याएँ हैं जो कि एक विद्यार्थी या शिक्षक को विद्यालय छोड़ने या दूसरे शब्दों में अध्ययन या अध्यापन कार्य छोड़कर भागने पर मज़बूर कर देती हैं।

अतः यहाँ यह बताना आवश्यक है कि प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक बनने के लिए बुद्धि लब्धि ज़रूरी है। इसके साथ ही एक और चीज़ ज़रूरी है या कहे कि बुद्धि लब्धि से भी ज़्यादा आवश्यक है, विपरीत परिस्थिति गुणांक। अर्थात् उनका विपरीत परिस्थितियों से निपटने व उसे अपने अनुरूप बनाने की क्षमता।

विपरीत परिस्थिति गुणांक को अंग्रेज़ी में *एडवरसिटी कोशेंट* भी कहते हैं। इस संप्रत्यय को सर्वप्रथम पॉल स्टालॅज ने सन् 1997 में अपनी किताब *एडवरसिटी कोशेंट — टर्निंग आब्स्टेकल्स* इन टू *आपरच्यूनिटी* में बताया।

पॉल स्टाल्ज ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि "The Capacity of the person to deal with the adversities of his life. As such, it is the Science of Human resilience" व्यक्ति अपने सामने कोई विपरीत परिस्थिति आने पर क्या प्रतिक्रिया देता है मुख्यतः इसी को विपरीत परिस्थिति गुणांक द्वारा मापते हैं।

विपरीत परिस्थिति गुणांक एक अंक है जो एक व्यक्ति के जीवन में आने वाले विपरीत परिस्थिति से लड़ने की क्षमता को मापता है। अतः इसे प्रतिरोध क्षमता के विज्ञान के नाम से भी जाना जाता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक एक व्यक्ति के जीवन की सफलता की ओर संकेत तो करता ही है, साथ ही साथ यह उस व्यक्ति की मानसिक अवसाद, अभिवृत्ति, अधिगम आदि के बारे में भी भविष्यवाणी करता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक चार कारकों नियंत्रण, उद्भव, पहुँच एवं सहनशीलता से मिलकर बना है। इन चारों कारकों पर अगर ध्यान दें तो हम यह देखेंगे कि ये चारों कारक विपरीत परिस्थितियों से निपटने के एक-एक पक्ष को रखते हैं। जैसे — नियंत्रण हमें बताता है कि किसी व्यक्ति का एक विपरीत परिस्थिति पर कितना नियंत्रण है वह कहाँ तक समझता है कि परिस्थिति उसके नियंत्रण में है (See it. Acknowledged change is needed)। इसी प्रकार उद्भव बताता है कि विपरीत परिस्थितियों का उद्भव कहाँ से हुआ है (Own it. Take ownership of the situation), पहुँच बताती है कि वह विपरीत परिस्थिति सिर्फ़ आपके एक ही क्षेत्र पर असर डालेगा या दूसरे क्षेत्र पर भी (Solve it. Develop your action plan) और सहनशीलता बताती है कि उस विपरीत परिस्थिति को आप कितना सहन कर सकते हैं (Do it. Execute the change) जब इन चारों कारकों को हम जोड़ते हैं तो हमें *एडवरसिटी कोशेंट* प्राप्त होता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक की विशेषताएँ

- विपरीत परिस्थिति गुणांक को मापा जा सकता है।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक जन्मजात न होकर, अर्जित की गई योग्यता है।

- विपरीत परिस्थिति गुणांक द्वारा व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक परिवर्तित हो सकती है।

उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि विपरीत परिस्थिति गुणांक एक जन्मजात योग्यता न होकर एक अर्जित की गई योग्यता है जो कि परिस्थिति और वातावरण के साथ बदल सकती है।

अतः वर्तमान में विद्वानों ने बुद्धि लब्धि से ज्यादा विपरीत परिस्थिति गुणांक को किसी क्षेत्र में सफलता के लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण माना है। बुद्धि लब्धि आपको प्राथमिक शिक्षक बनाने तक सहायता कर सकती है, परंतु प्राथमिक शिक्षक बने रहने में विपरीत परिस्थिति गुणांक ही कारगर साबित होगा

विपरीत परिस्थिति गुणांक को अगर एक उदाहरण के द्वारा समझें तो और बेहतर होगा, जैसे — अगर हम उपरोक्त समस्या में से ही किसी एक समस्या को उदाहरणस्वरूप लें, जैसे — यह अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजना अनावश्यक या गैर महत्वपूर्ण समझते हैं यह एक विपरीत परिस्थिति है तो यहाँ एक सामान्य शिक्षक जिसकी *एडवरसिटी कोशेंट* सामान्य है। वह थोड़ा-बहुत अपनी तरफ से समझाएगा उसके बाद छोड़ देगा क्योंकि उसकी सहनशक्ति जवाब दे देगी, परंतु एक ऐसा शिक्षक जिसका *एडवरसिटी कोशेंट* अच्छा है वे अलग-अलग प्रलोभन, अलग-अलग तरीके से उस अभिभावक को समझाने का प्रयास करेगा। जैसे, उनके बच्चों की शिक्षा उनके भविष्य में होने वाली उनकी आजीविका के लिए कैसे फ़ायदा पहुँचाएगी यह बताएगा कि मिड-डे-मिल भी दिया जाता है तथा इसके लाभों के बारे में बताएगा इत्यादि। जिससे वह अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए तैयार हो जाए। एक और उदाहरण देखते हैं, जैसे — मान लें कि किसी विद्यालय में शौचालय नहीं है (जो कि एक विपरीत परिस्थिति है) तो इससे बहुत से प्राथमिक शिक्षक विद्यालय को छोड़ देंगे, अर्थात् उस परिस्थिति से भाग खड़े होंगे, परंतु जिनकी प्रतिरोध क्षमता अच्छी है, वे इस परिस्थिति से भागेंगे नहीं, अपितु शौचालय कैसे बने इसके लिए प्रयास करेगा। यह तो हो गयी उन शिक्षकों की में बात जो सरकार द्वारा नए भर्ती होंगे, परंतु उन शिक्षकों का क्या जो पहले से ही प्राथमिक शिक्षा में हैं? विदित होगा कि हम इस लेख में पहले ही इस बात की चर्चा की गयी है कि विपरीत परिस्थिति गुणांक जन्मजात न होकर अर्जित योग्यता है। अतः एक अर्जित योग्यता को कोई भी इंसान जो उसके लिए प्रयास करे प्राप्त कर सकता है व साथ ही साथ बढ़ा भी सकता है।

किसी व्यक्ति में विपरीत परिस्थिति गुणांक बनाने के तरीके

- किताबों में उन पात्रों पर प्रकाश डाला जाए, जो विपरीत परिस्थितियों से लड़ कर जीतते हैं।
- टेलीविजन में उन कार्यक्रमों को दिखाया जाए, जो इन सब संदर्भों पर आधारित हों।
- अखबारों व पत्रिकाओं में इस संदर्भ आधारित खबरों को छापा जाए, जिससे व्यक्ति इसे सीख सके व इससे प्रेरणा ले सकें।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक के शीर्षक पर कार्यशाला व संगोष्ठियों का आयोजन कराया जाए।

अतः इन सब उपरोक्त प्रयासो से किसी व्यक्ति के अंदर विपरीत परिस्थिति गुणांक को उत्पन्न किया जा सकता है व साथ ही साथ बढ़ाया जा सकता है। अगर लेख में लिखी हुए बातों पर गंभीरता से ध्यान दें व इस संप्रत्यय को ढंग से समझें तो वर्तमान में जो प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति है उसे सुधारा जा सकता है। जिसका परिणाम यह होगा कि आगे से न तो कोई शिक्षक और न ही कोई विद्यार्थी विद्यालय छोड़ेगा।

निष्कर्ष

सरकार को चाहिए कि वे प्राथमिक विद्यालयों में ऐसे शिक्षक भेजें जिनकी *एडवरसिटी कोशेंट* अर्थात् जिनमें विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता अच्छी हो। इसके लिए जब सरकार शिक्षकों की भर्ती के लिए बुद्धि लब्धि की परीक्षा करवाती है उसके साथ ही साथ उसे *एडवरसिटी* कोशेंट की भी परीक्षा करवानी चाहिए। जिन शिक्षकों में विपरीत परिस्थितियों से लड़ने व उसे अपने अनुरूप करने की क्षमता अधिक हो उन्हें ही शिक्षकों के पद के लिए भर्ती करना चाहिए, अपितु नहीं। तब जाकर वास्तविकता में हमारे प्राथमिक विद्यालय, विद्यार्थियों के नींव के ईंट को मज़बूत करेंगे जिस पर हमारे आने वाले समाज के भविष्य की दीवारें टिकेगी।

संदर्भ

उदय शंकर, 1984. *एजुकेशन ऑफ़ इंडियन टीचर्स*, स्टर्लिंग पब्लिर्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2009. *अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*, नयी दिल्ली.

———. 1978. *टीचर एजुकेशन करिकुलम*, एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.

कुमार अशोक, 1991. *करंट ट्रैड्स इन इंडिया एजुकेशन*. एस.बी. फॉर आशिष पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.

निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, भारत का राजपत्र 27 अगस्त 2009 भारत सरकार, नयी दिल्ली

मुखर्जी, एस.एम. 1968. *एजुकेशन ऑफ़ टीचर्स इन इंडिया*. वॉल्यूम 1. एस चाँद एड कंपनी, नयी दिल्ली.

रूहेला, सत्यपाल 2007. *विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा*. अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा.

स्टॉल्ज, पी. 1997. *एडवरसिटी कोशेंट — टर्निंग ॲबस्टेकल्स इन टू ऑपरच्यूनिटी,* न्यूयॉर्क.https://carinasciences.com/2018/08/02/adversity-quotient-and-leveraging-micro-adversities/ पर ऑन लाइन देखा गया।